P.G.
SEM-II
Paper-9

निपुणिका का चरित्र चित्रण

डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखित 'बाणभट्ट की आत्मकथा' शीर्षक उपन्यास में भट्टिनी, निपुणिका महामाया, सुचरिता आदि अनेक नारी पात्र आए हैं। इन पात्रों में निपुणिका एक सशक्त नारी पात्र है जो उपन्यास की मुख्य कथा और विविध पात्रों को अपने व्यक्तित्व से प्रभावित करती है। निपुणिका उपन्यास के नायक बाणभट्ट से प्रेम करती है और भट्टिनी भी किंतु दोनों के प्रेम में अंतर है। निपुणिका का प्रेम जहाँ भौतिक है वहीं भट्टिनी का आध्यात्मिक। बाणभट्ट भी दोनों से प्रेम करता है किंतु निपुणिका के प्रति बाणभट्ट का प्रेम वास्तविक प्रेम नहीं है वह केवल सहानुभूतिजन्य है। वास्तविक प्रेम तो वह भट्टिनी से ही करता है और उस प्रेम में आदर भी है श्रद्धा भी। इस कारण ही हम निपुणिका को उपन्यास की नायिका नहीं मानते। लेकिन निपुणिका के चरित्र के कारण ही उपन्यास रोचक और मार्मिक बन सका है।

निपुणिका का संक्षिप्त परिचय उपन्यास में इस प्रकार दिया गया है। निपुणिका का जन्म अस्पृश्य परिवार में हुआ था लेकिन इसके पूर्वजों को सौभाग्यवश गुप्त सम्राटों के यहाँ नौकरी मिल गयी थी। नौकरी मिलने से उसकी सामाजिक मर्यादा बढ़ गयी थी। निपुणिका आजकल अपने को पवित्र वैश्य वंश में गिनने लगी है और ब्राह्मण-क्षत्रियों में प्रचलित प्रथाओं का अनुकरण करने लगी है। उसमें विधवा विवाह का चलन हाल ही में बंद हुआ है। निपुणिका का विवाह किसी कांदविक वैश्य के साथ हुआ जो भड़भूजे से ऊपर उठकर सेठ बना था। विवाह के एक वर्ष बाद ही संभवतः निपुणिका विधवा हो गयी। दुःखिनी निपुणिका घर से भाग गयी और उज्जयिनी में बाणभट्ट की नाट्यमंडली में सम्मिलित हो गयी। उस समय उसकी आयु सोलह वर्ष की थी। वह अधिक सुन्दर नहीं थी किन्तु उसकी आँखें और अँगुलियाँ बहुत सुन्दर थी तथा नृत्य के समय उसकी चपलता देखने योग्य होती थी। निपुणिका बाणभट्ट से प्रेम करती थी लेकिन एक दिन बाणभट्ट की उपेक्षा से घबड़ाकर वह नाट्यमंडली छोड़ देती है और उज्जयिनी से अज्ञात स्थल की ओर प्रस्थान कर जाती है। अचानक छः वर्ष बाद बाणभट्ट निपुणिका को स्थाण्वीश्वर में मिल जाता है। तब निपुणिका पान बेचने

वाली बन जाती है चुकी थी और मौखरि-राज ग्रहवर्मा के अंतःपुर में पान पहुँचाया करती थी। निपुणिका के सहयोग से बाणभट्ट भट्टिनी को मुक्त कराने में सफल होता है। निपुणिका जीवन पर्यंत बाणभट्ट के साथ रहती है और उसी के सम्मुख प्राणांत करती है।

निपुणिका हतभाग्या है। उज्जयिनी से बाणभट्ट की नाट्यमंडली को छोड़ने के बाद उसे कहीं भी स्थायी आश्रय प्राप्त नहीं होता है। वह अपने जीवन जी सकी और न मर सकी। उसने न अपने चरित्र को पहचाना और न शरीर को। इसलिए उसका शरीर सदैव वासना में डूबा रहा। जिसको उसने चाहा वही उसकी उपेक्षा करने लगा। उसकी आँखों के सामने वह पराया दिखने लगा। निपुणिका को सदैव बाणभट्ट की नाट्यमंडली में व्यतीत क्षणों की याद आती रहती है। सिनेमारील की तरह अधिकांश घटनाएँ उसके समक्ष अनायास जीवंत हो उठती हैं। बाणभट्ट के प्रति उसका एकतरफा प्रेम मोह उसे किंकर्तव्यविमूढ़ कर देती है। बाणभट्ट के प्रति निपुणिका का यह कथन यहाँ दृष्टव्य है "निर्दय, तुमने बहुत बार बताया था कि तुम नारी देह को देवमंदिर के समान पवित्र मानते हो, पर एक बार भी तुमने समझा होता कि यह मंदिर हाड़-मांस का है, ईंट-चूने का नहीं। जिस क्षण मैं अपना सर्वस्व लेकर इस आशा से तुम्हारी ओर बढ़ी थी कि तुम उसे स्वीकार कर लोगे, उसी समय तुमने मेरी आशा को धूलिसात कर दिया। उस दिन मेरा निश्चित विश्वास हो गया कि तुम जड़-पाषाण-पिंड हो, तुम्हारे भीतर न देवता है, न पशु है, एक अगाध जड़ता। मैं इसीलिए वहाँ नहीं ठहर सकी।" स्पष्ट है निपुणिका का बाणभट्ट के प्रति शारीरिक आकर्षण प्रेम निपुणिका के पतन का कारण बना। निपुणिका के कथन में तीव्र व्यंग्य दर्शनीय है।

निपुणिका कोमल हृदय नारी है। अपने दुःखों की तो उसने कभी चिन्ता नहीं की किन्तु दूसरों को वह दुःखी नहीं देख सकती। पान बेचनेवाली होने के कारण उसे छोटे राजकुल में अंतःपुर में भी पान पहुँचाने जाना पड़ता था। वहीं उसकी भेंट तुवरमिलिंद की कन्या चंद्रदीधिति उर्फ भट्टिनी से होती है। जिसके दुःख को समझकर वह अपना दुःख भूल जाती है।

अपने प्राणों को संकट में डालकर भी [struck] निपुणिका बाणभट्ट के सहयोग से भट्टिनी को मौखिरी राज कृष्णवर्मा के अंतःपुर से बाहर निकालने में सफल हो जाती है। इसके बाद निपुणिका भट्टिनी के साथ उसकी छाया बनकर ही रहती है और उसकी सुरक्षा का पूरा उत्तरदायित्व स्वयं ओढ़ लेती है। निपुणिका भट्टिनी के स्वाभिमान की रक्षा के लिए कुछ भी करने को तत्पर रहती है। बाणभट्ट चाहता है कि कुमारवर्द्धन के निमंत्रण को स्वीकार कर भट्टिनी को महारानी राज्यश्री का आतिथ्य ग्रहण कर लेना चाहिए। लेकिन निपुणिका इसे भट्टिनी का अपमान समझ कर इस आमंत्रण का विरोध करती है। निपुणिका का विचार है कि भट्टिनी स्थाण्वीश्वर जाएगी तो एक स्वतंत्र देश की रानी के रूप में अपने स्वाभिमान को रखते हुए जाएगी।

निपुणिका साहस की प्रतिमूर्ति है। भट्टिनी के साथ-साथ बाणभट्ट की भी संकट में रक्षा करती है। चण्डी मंदिर के धूर्त पुजारी को उल्लू बनाकर और अपने नारीत्व को दाव पर लगाकर निपुणिका भट्टिनी को छिपाने की व्यवस्था करती है। कालांतर में भट्टिनी को गंगा में कूदते देख निपुणिका बाणभट्ट से उसकी रक्षा करने के लिए कहती है और स्वयं भी गंगा में कूद पड़ती है। इसी प्रकार वज्रतीर्थ श्मशान में जब अघोरघंट और चंडमंडना, बाणभट्ट की बली चढ़ाने को तत्पर होते हैं तब निपुणिका चंडमंडना को गिराकर बाणभट्ट की रक्षा करती है।

निपुणिका महावराह की आराधना में रत एक अनन्य साधिका है। बाणभट्ट निपुणिका के इस रूप को देखकर आश्चर्यचकित हो जाता है। निपुणिका एक देवांगना के समान प्रतीत होती है। भक्तिपूर्ण गद्गद स्वर में स्तोत्र पाठ करते हुए निपुणिका को बाणभट्ट निर्निमेष नयनों से देखता रह जाता है। बाणभट्ट क्षण भर के लिए भूल जाता है कि निपुणिका छमाही नाट्यमंडली की परिचित निउनिया है। बाणभट्ट को खोकर निपुणिका ने मोह का परित्याग कर दिया था और भक्ति का सहारा (विस्मृत) अपना लिया था। निपुणिका के इस परिवर्तन रूप से बाणभट्ट बहुत प्रभावित होता है।

निपुणिका एक अद्वितीय

प्रेमिका है। उसके प्रेम में आसक्ति भी है, नैतिक मूल्य भी है। वह बाणभट्ट से हार्दिक प्रेम करती है और चाहती भी है कि बाण उसका हो जाए। लेकिन जब उसे मालूम होता है कि बाणभट्ट उसे प्यार न कर भट्टिनी की ओर आकर्षित है तो वह उच्चकोटि विचारों से निपुणिका को प्रभावित करते हैं। वास्तव में ऐसा प्रेम दुर्लभ है जहाँ प्रेमिका अपनी आँखों से यह देख रही हो कि उसका प्रियतम उसे नहीं किसी अन्य को प्यार करता है फिर भी वह अपनी सेवा की हितकांक्षा में लगी हो। निपुणिका का प्रेम केवल इसी बात की पुष्टि चाहता है कि केवल एक बार बाण यह कह भी दे कि वह निपुणिका को चाहता है। कुछ समय बाद बाणभट्ट को जब इस बात का पता चलता है तब वह पश्चाताप ग्रस्त हो जाता है। बाणभट्ट का कथन -- अवश्य था, निउनिया मैं क्या सचमुच जड़ पाषाण पिंड हूँ। और बाणभट्ट के मुख से यह सुनते ही निपुणिका का मुखमण्डल स्वर्णदीप्त हो उठा। उसने अपना प्राप्य पा लिया।

निपुणिका के अनुपम पवित्र प्रेम की परिणति उस दिन होती है जब उसने प्रेम की दो परस्पर विरुद्ध क्रियाओं को केन्द्रित कर दिया। बाण और भट्टिनी के प्रेम के बीच वह स्वयं को बाधक समझ रही थी। इसलिए जब 'रत्नावली' नाटक में निपुणिका रत्नावली के रूप में अभिनय हेतु उतरी तो नाटक के अंत उसने राजा (बाण) और वासवदत्ता का हाथ एक दूसरे को पकड़ाते हुए प्राणांत कर लिया। अभिनय करके बाणभट्ट ने जिसे पाया था अभिनय करके ही उसे खो दिया। चारुस्मिता की छवि में निपुणिका स्त्री जाति का शृंगार थी, सतीत्व की मर्यादा थी, हमारे जैसी कुमार्गगामिनी नारियों की मार्गदर्शिका थी।

— डॉ० कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज